लखनऊ में बनेगा आर्बिटल रेलवे कारिडोर

रेलवे बोर्ड ने **महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट** के अंतिम सर्वे को दी अनुमति, चारों ओर 170 किमी की लंबाई में बिछेगा नया ट्रैक

जागरण संवाददाता, लखनऊ : राजधानी में आउटर रिंग रोड से सड़क यातायात सुधारने के बाद ट्रेनों का आवागमन बेहतर करने की दिशा में बड़ी पहल हुई है। रेलवे ने लखनऊ आर्बिटल रेल कारिडोर का फाइनल लोकेशन सर्वे कराने को मंजूरी दी है। रेलवे बोर्ड इस पर 4.25 करोड़ रुपये खर्च करेगा। महत्वाकांक्षी परियोजना के तहत लखनऊ शहर के चारों ओर एक नया रेल कारिडोर विकसित होगा, ताकि रेल सुविधाओं में बड़ा सुधार हो सके। आर्बिटल रेल कारिडोर से आशय यह है कि शहर के चारों ओर एक रिंग की तरह रेलमार्ग बनेगा, जो अंदर के मार्गों पर ट्रेनों का दबाव कम करेगा।

- रेल परिचालन को मिलेगी नई दिशा संचालन प्रक्रिया और होगी बेहतर
- शहर के सभी सात प्रमुख मार्गों को आर्बिटल कारिडोर से जोड़ा जाएगा

परियोजना में प्रस्तावित सुविधाएं

- **सुलतानपुर सेक्शन पर नया स्टेशन टर्मिनल :** 20 प्लेटफार्म वाला नया रेलवे टर्मिनल विकसित किया जाएगा, जिससे ट्रेनों की पार्किंग व संचालन बेहतर होगा।
- **मोहान के पास कार्गो टर्मिनल :** मोहान क्षेत्र में एक कार्गो टर्मिनल बनाया जाएगा, जिससे औद्योगिक और वाणिज्यिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और मालगाड़ियों की आवाजाही बढ़ेगी।

ये होंगे लाभ

- रेलगाड़ियों के परिचालन में विलंब को कम करके प्रति गाड़ी लगभग एक घंटे का समय बचाया जाएगा।
- कारिडोर वाई कनेक्शन के माध्यम से जुड़ा होगा और रेल-आन-रेल पुलों से प्रमुख मार्गों से गुजरेगा।
- एक नया ग्रीनफील्ड मेगा पैसेंजर टर्मिनल विकसित किया जाएगा, जिसमें 30 से अधिक लाइनें और 20 प्लेटफार्म होंगे।
- मेगा रेल लाजिस्टिक्स पार्क का निर्माण आगरा एक्सप्रेसवे के निकट किया जाएगा।

सर्वे का महत्व

एफएलएस के तहत रेलवे ट्रैक बिछाने के लिए सटीक मार्ग का अध्ययन होता है। सर्वे के बाद विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार होगी।

- ट्रैक किन क्षेत्रों से गुजरेगा व कैसी भौगोलिक चुनौतियां आएंगी?
- भूमि अधिग्रहण की आवश्यकता होगी या नहीं?
- रेलवे के इस विस्तार से पर्यावरण पर प्रभाव क्या पड़ेगा?

उत्तर रेलवे लखनऊ मंडल की ओर से बनने वाला लखनऊ आर्बिटल रेल कारिडोर 170 किलोमीटर लंबा होगा और यह शहर के बाहरी क्षेत्र से गुजरेगा, इस रेलमार्ग को आउटर रिंग रोड की तर्ज पर विकसित किया जाएगा, जो लखनऊ को चारों ओर से जोड़ेगा। इससे मुख्य रेलवे स्टेशनों व व्यस्ततम रेल मार्गों पर दबाव कम होगा। परियोजना के तहत आलमनगर, मानकनगर, उतरेटिया, मल्हौर, मोहिबुल्लापुर, सुलतानपुर रूट के अनूपगंज या बक्कास, बादशाह नगर जैसे प्रमुख रेलवे स्टेशनों को आपस में जोड़ा जाएगा। बाहर से आने वाली मालगाड़ियों व कुछ ट्रेनों को चारबाग लाने की जरूरत नहीं होगी, ट्रैफिक पर दबाव कम होगा।

रेलवे बोर्ड ने इस परियोजना के लिए स्वीकृति पत्र भेज दिया है। सर्वे पर आने वाला खर्च रेलवे के नीति निर्माण, अनुसंधान और अन्य व्यय की श्रेणी में रखा गया है। महत्वपूर्ण परियोजना के पूरा होने से लखनऊ का रेलवे नेटवर्क आधुनिक और सुगम होगा, जिससे यात्रियों और व्यापारिक गतिविधियों को बड़ा लाभ मिलेगा। सर्वे पूरा होते ही विस्तृत योजना बनाई जाएगी और निर्माण कार्य जल्द शुरू होने की उम्मीद है।

लखनऊ क्षेत्र में वर्तमान में सात मुख्य रेल मार्ग हैं, जिनके माध्यम से सभी यात्री व मालगाड़ी ट्रेनें संचालित होती हैं। इन मार्गों पर भारी भीड़-भाड़ के कारण रेल यातायात बाधित हो रहा। यह क्षेत्र उत्तर रेलवे, उत्तर-पूर्व रेलवे और पूर्व-मध्य रेलवे के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है, जिससे यहां रेल यातायात का दबाव अत्यधिक बढ़ जाता है। इस समय अयोध्या, वाराणसी, कानपुर, मुरादाबाद, सीतापुर, रायबरेली और सुलतानपुर रेलवे ट्रैक पर अत्यधिक दबाव रहता है। लखनऊ/ऐशबाग स्टेशनों पर 90 प्रतिशत मालगाड़ियां और 70-80 प्रतिशत यात्री ट्रेनें गुजरती हैं। संबंधित खबर >> पेज 7